BC-22-23

आधुनिक हिंदी कविता

डॉ० ओकेन्द्र
डॉ० बालक राम भद्री
डॉ० संगीता वर्मा

PRINCIPAL
Nutan
SELU

Scanned with OKEN Scanner

NUTAN MAHAVIDYALAYA SELU

आधुनिक हिंदी कविता

सम्पादक

डॉ० ओकेन्द्र
डॉ० बालक राम भद्री
डॉ० संगीता वर्मा

जे.टी.एस. पब्लिकेशन्स
वी-508, गली नं.17, विजय पार्क,
दिल्ली-110053
मो. 08527460252, 09990236819
ईमेल: jtspublications@gmail.com

PRINCIPAL
Nutan Mahavidyalaya
SELU. Dist. Parbhani

Scanned with OKEN Scanner

जे.टी.एस. पब्लिकेशन्स, दिल्ली

आधुनिक हिंदी कविता

सम्पादक
डॉ॰ ओकेन्द्र
डॉ॰ बालक राम भद्री
डॉ॰ संगीता वर्मा

वैधानिक चेतावनी

पुस्तक के किसी भी अंश के प्रकाशन- फोटोकॉपी, इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों में उपयोग के लिए लेखक/ संपादक/ प्रकाशक की लिखित अनुमति आवश्यक है। पुस्तक में प्रकाशित शोध-पत्रों में निहित विचार तथा संदर्भों का संपूर्ण दायित्व स्वयं लेखकों का है। संपादक/ प्रकाशक इसके लिए उत्तरदायी नहीं है।

© सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रथम संस्करण : २०२३

ISBN 978-93-5891-552-5

प्रकाशक

जे०टी०एस० पब्लिकेशन्स

वी-५०८, गली नं०१७, विजय पार्क, दिल्ली-११००५३

दूरभाष : ०८५२७ ४६०२५२, ०११-२२६११२२३

E-Mail : jtspublications@gmail.com

मूल्य : १२०० रूपये

आवरण : प्रतिभा शर्मा, दिल्ली

मुद्रक : तरूण ऑफसेट प्रिंटर्स, दिल्ली

Adhunik Hindi Kavita Edited by
Dr. Okendra, Dr. Balak Ram Bhadri, Dr. Sangita Verma

Nutan Mahavidyalaya
SELU Dist. Parbhani

११. जल संकट के प्रश्न और आधुनिक कविता — १०१

डॉ० अंचल कुमारी

१२. राम गोपाल शर्मा 'दिनेश' के काव्य में महात्मा गांधी जी का जीवन-चरित — १११

प्रा० अजित दादू फाळके

१३. डॉ. पवनेश की कविताओं में देशप्रेम — ११८

डॉ० बंदना चंद

१४. बलवंत मनराल और उनका कविता संग्रह 'पहाड़ आगे : भीतर पहाड़' — १२६

डॉ० पवनेश ठकुराठी

१५. आधुनिक हिंदी कविता : नारी की वेदना — १४१

डॉ० राजश्री लक्ष्मण तावरे

१६. प्रयोगवादी युगीन हिंदी काव्य साहित्य का विकास — १४६

डॉ० संघमित्रा पुष्टि

१७. आधुनिक हिंदी कविताओं में राष्ट्रीय लोक तत्वों का बोध — १६१

रूद्रप्रताप सिंह

१८. भारतीय भाषा एवं संस्कृति में कन्नड़ के वचनगार्तियों का देन — १७८

डॉ० किरण बी. कामाजी

१९. आधुनिक हिंदी कविता में राष्ट्रीय और सांस्कृतिक चेतना — १८६

डॉ० हेमचन्द्र दुबे

२०. सूदाम पाण्डे धूमिल के काव्य में सामाजिक, राजनीतिक संवेदना — १९३

डॉ० प्रकाश कृष्णदेव धुमाल

२१. सुशीला टाकभौरे के काव्य में दलित चेतना — २१०

डॉ० अर्चना चंद्रकांत पत्की

२२. मानवीय संवेदना और सरोकारों के कवि रामधारी सिंह 'दिनकर' — २१८

डॉ० जयशंकर शुक्ल

PRINCIPAL
Nutan Mahavidyalaya
SELU, Dist. Parbhani

Scanned with OKEN Scanner

२१

सुशीला टाकभौरे के काव्य में दलित चेतना

–डॉ. अर्चना चंद्रकांत पत्की

सारांश :– दलित साहित्यकारों में से अनेकोंने दलित पीड़ा को कविता की शैली में अभिव्यक्त किया। आधुनिक काल में सुशीला टाकभौरे जी ने अपनी कविताओं में दलित समाज, दलित स्त्री व स्त्री की समानता को अभिव्यक्त किया है। यथार्थ को प्रत्यक्ष रूप में अभिव्यक्त करने में सुशीला टाकभौरे सिद्धहस्त है। अपनी कविताओं के माध्यम से दलित जागृती का संदेश दिया है। इनकी कविताओं पर म.फुले, डॉ. बाबासाहब आंबेडकर की विचारधारा का प्रभाव रहा है। अन्याय के विरुद्ध विद्रोह इनकी कविता का मुख्य स्वर है।

बीजशब्द :– मानवतावाद, समानता, बंधुता, निर्भीडता, विद्रोह।

प्रस्तावना :– दलित कविता ने जिस विश्वास के साथ अपने संघर्ष यात्रा की शुरुआत की उस संघर्ष यात्रा में सुशीला टाकभौरे का योगदान सराहनीय रहा है। क्योंकि समाज में व्याप्त हजारों साल के शोषण–दमन की यातना से मुक्ति की छटपटाहट दलित कविता में नजर आती है। दलित कविता समाज में जागृती का संदेश देती है। सुशीला टाकभौरे जी ने अपने मनोव्यथा, वेदना– संवेदना को काव्य के माध्यम से अभिव्यक्त किया क्योंकि हम जानते है समग्र हिंदी दलित साहित्य 'अनुभूती से अभिव्यक्ति' तक की यात्रा का साहित्य माना जाता है।

PRINCIPAL
Nutan Mahavidyalaya
SELU. Dist. Parbhani

Scanned with OKEN Scanner

[illegible] दलित लेखकों में श्योराज सिंह बेचैन, अनिता भारती, [illegible] मोहनदास नैमिशराय, सुशीला टाकभौरे, रामजिडा [illegible] ओमप्रकाश वाल्मिकी, आदि नाम उल्लेखित है। दलित लेखन में पुरुषों की अपेक्षा स्त्री की भूमिका कम नजर आती है। इन सभी रचनाकारों ने दलित लेखन का केंद्रबिंदू उन दलितों को बनाया है जो आज भी हाशिए पर नजर आते है। जहाँ तक साहित्य में दलित स्त्रियों की सीधी उपस्थिति का सवाल है, वह अभी भी पीछे है। इसका कारण बनाते हुए श्योराजसिंह कहते है– "हिंदी में दलित लेखन में रचनाशील स्त्रियों की अनुपस्थिती को समझने के लिए भारतीय समाज में स्त्रियों की दशा को जानना जरूरी है। अभी तो साहित्य में दलित ही मुख्यधारा में अपनी जगह बनाने के लिए संघर्ष कर रहा है।" फिर भी हिंदी दलित लेखन में एक सशक्त हस्ताक्षर के रूप में सुशीला टाकभौरे अग्रणी रही है।

प्रस्तुत आलेख में सुशीला टाकभौरे की कविताओं के माध्यम से दलित स्त्री की सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक तथा शैक्षिक स्थिति को उजागर किया है। साथ ही विद्रोह की बात [illegible] करती है। उनकी अधिकतर कविताओं पर आंबेडकरवादी विचारधारा का प्रभाव है। नारी मन के अन्तर्दवन्द्व का चित्रण [illegible] का मुख्य विषय रहा है।

'यह तुम भी जानों' इस काव्यसंग्रह में दलित विमर्श और स्त्री विमर्श का विशेष रूप से चिंतन हुआ है ।इस काव्यसंग्रह में [illegible] समाज में स्त्री मुक्ति, उसकी स्वतंत्रता तथा उसके [illegible] की बात कवियत्री करती है। सोलहवी सदी की नारी मन [illegible] बीसवीं सदी के अंतिम दशक में भी नारी मन को यही

PRINCIPAL
Nutan Mahavidyalaya
SELU. Dist. Parbhani

जो वे सोई खाऊँ, जहाँ बिठावे
तित ही बैठूं, बैचे तो बिक जाऊँ।"

आज भी यह भाव नारी के लिए आदर्श बने हुए है। अधिक तर नारियाँ स्वयं ही इन भावों के बंधनो मे बंधी हुई है। इस काव्यसंग्रह मे कवियत्री की भूमिका दलित महिला लेखन पर रही है। इस काव्यसंग्रह में नारी की स्थिति का, उसकी वेदना-संवेदना और उसके विरोध का भाव नजर आता है। नारी अपनी जीवन की यथार्थ स्थिति से किस तरह अनजान रहती है। यह भाव 'सागर और आकाश' कविता में व्यक्त होता दिखाई देता है-

"मै ढूंढ़ती हूँ क्षितिज–रेखा
पूर्व से पश्चिम की ओर
मै जान लेना चाहती हूँ
क्षितिज के उस पार क्या है?"

हमारे पुरुष प्रधान समाज में सुशीला टाकभौरे जी के काव्य की नारी स्त्री–पुरुष समानता की माँग करती है। वह ऐसा मानती है कि नारी का उत्थान ही सामाजिक उत्थान की पूर्तता है। इसी स्थिति को व्यक्त करती है 'स्त्री' कविता की काव्य पंक्तियाँ–

"रोक नहीं पाओगे
स्त्री की उँची उड़ान को
काट नही सकोगे
उसके पंख
बांध नही सकोगे
उसके पैरों में परंपरा की बेड़ियाँ।"

स्त्री वर्तमान समय मे आजाद होना चाहती है। अपने पैरों में पड़ी बेड़ियां को तोडना चाहती है। किंतु परिवार के कारण वह

PRINCIPAL
Nutan Mahavidyalaya
SELU, Dist. Parbhani

Scanned with OKEN Scanner

अपने आप को बंधन में रहकर व्यवस्था के साथ समझौता करती है। अपने आप को पुरुषों की कठपुतलियां बनकर चुपचाप अन्याय अत्याचार सह लेती है। अपने जिंदगी की डोर पुरुषों के हाथों में देकर अपनी स्वतंत्रता को सौंप देती है। इसी को व्यक्त करती कविता 'यह कौन सा समाज है' कि काव्य पंक्तियाँ है–

"यह कौन सा समाज है
बरसों से ठहरा है
बरसों से उसके पैरों में
वही हाथों में
व्याप्त, अपवित्रता का बोझ
दासता, लाचारी, बेबसी
कोई परिवर्तन नहीं।"

यह स्थिती केवल दलित स्त्री की नही बल्की समाज में स्थित हर स्त्री की है। ऐसी सभी स्त्रीयों को सुशीला टाकभौरे जी जागृत करती है। उनकी कविता 'आग का धर्म' की पंक्तियाँ है–

"तुम्हे सचेत रहना है
प्रभावित होना अभुदय है,
जलना–जलाना जीवन का संदेश नही
'अच' दीप भव' का संदेश पहुँचाना है।"

कवियत्री ने अपनी कविता में स्त्री ने पुरुष अथवा पितृसत्ताक व्यवस्था द्वारा थोपी गई गुलामी की बेड़ियों को तोड़ा ... बेनकाब किया है, स्त्री–पुरुष समानता को बढ़ावा दिया है। अपने आप को साबित करने में वह असमर्थ रही है। वह ...–बंधन को तोड़ने की बात करती है, पर साहस नहीं दिखा ...। अपनी मर्जी से आज भी वह अपनी जिंदगी नहीं जी सकती

PRINCIPAL
Nutan Mahavidyalaya
SELU, Dist. Parbhani

है। किंतु अब थोडा बहुत परिवर्तन आया है। स्त्री अब खुले-आम विद्रोह करती दिखाई देती है।

सुशीला टाकभौरे की 'साहस' कविता मे परंपरा के बंधनों को तोड़ने वाली दलित स्त्री का चित्रण किया गया है। वह कहती है–

"सागर बड़ा है
उसका तट बड़ा है
उसी तरह
हमारी बेडियाँ
हमारी रूढ़िंया भी बड़ी है।"

किंतु कवयित्री नारी को अपना अस्तित्व पहचानने का संदेश देती है कि तुम भीड़ में भी अपनी पहचान बनाओं। जब तक तुम स्वयं जागृत नहीं होगी तब तक उसे समाज का हिस्सा नहीं समझा जायेगा। उसे खुद अपनी स्वतंत्रता और अधिकारों के लिए लड़ना होगा। इसीलिए कवयित्री समाज से प्रश्न पूछती है, 'तुमने उसे कब पहचाना?' इस काव्यसंग्रह की कविताएँ समाज से प्रश्न पूछती है, स्त्री में समाजव्यवस्था तोड़ने का साहस बढ़ाती है। उनकी 'जानकी जान गई' कविता की कुछ काव्य पंक्तियाँ है–

"आज जानकी सब जान गयी है
अब वह धरती में नहीं
आकाश में जाना चाहती है
बिजली सी चमक कर
संदेश देना चाहती है
पुरुषप्रधान समाज में
स्त्री की भी
समानता की अधिकारी है।"

PRINCIPAL
Nutan Mahavidyalaya
SELU, Dist Parbhani

NUTAN MAHAVIDYALAYA SELU

इस कविता में कवियत्री समाज में स्त्री–पुरुष समानता की इस बात करती है। समाज में उसे प्रतिष्ठा की बात करती है। समाज व्यवस्था के बंधन असे नारी मुक्ति की बात कवयित्री करती है। उनका मानना है समाज में हर तरह से व्यवस्थाएं पुरुषों के हक में ही बनाई गई है। नारी को वंचित रखा गया है। अब नारी उन अपने अधिकारों के प्रति जागृत होकर अधिकारों की माँग कर रही है। स्त्री शिक्षा के कारण वह अपने अधिकारों के प्रति जागृत हुई है। अब स्त्री समाज द्वारा दिये गये नियमों को नाकारने लगी है। उनकी कविता 'आज की खुद्दार औरत' में वर्तमान मे बन रही औरत की पहचान बनाई गई है–

"आज यह खुद्दार औरत
अपने आप को पहचान गई है
इसे यूँ न सताओं
वरना यह भी
तुम्हारे सर्वस्व को नकार कर
तुम्हें नीचा दिखायेगी।

दलित स्त्री अब समाज एवं परिवार में अपनी पहचान बनाने लगी है, वह सवर्ण समाज से तो पीड़ित है साथ ही अपने समाज मे भी शोषित एवं पीड़ित है। इनकी कविताओं में स्त्री मुक्ति का स्वर है। दलित स्त्री स्वयं पहचान चुकी है की इस अंधकार की मुक्ति का मार्ग सिर्फ शिक्षा ही है। शिक्षा से ही मनुष्य का व्यक्तित्व परिपूर्ण होता है। शिक्षा स्त्री सशक्तिकरण की कुंजी है। 'वह मर्द की तरह जी सकेगी' कविता में शिक्षा के महत्व को कवयित्री ने दर्शाया है–

"मान सम्मान में
ज्ञान विज्ञान में

PRINCIPAL
Nutan Mahavidyalaya
SELU, Dist. Parbhani

MAHAVIDYALAYA SELU

पूरे विश्व को मुठ्ठी में रखकर समझेगी
तभी वह मर्द की तरह जी सकेगी।"

सुशीला टाकभौरे की कविता में स्त्री अपना अस्तित्व जूटाने में सक्षम रूप मे प्रस्तुत हुई है। वह अपने एवं अपने अधिकारों के प्रति सचेत हुई है। फिर भी नारी अब भी कमजोर, निर्बल, असहाय, अधिकारहीन है। लेकिन क्यों? इन सब कारणों में ढूंढना होगा। सुशीला टाकभौरे कहती है की दलित स्त्रियों में दोहरे अभिशाप की पीड़ा है। क्योंकि वे दलित होने के साथ–साथ स्त्री जो है। वह अपने आप को अबला मानती है। समाज के बंधन वह तोड़ नहीं पाती और सारे दुख दर्द सहती रहती है, उनकी कविता 'विद्रोहीणी' में कहती है–

"माँ बाप ने पैदा किया था
गूँगा।
परिवेशने लंगडा बना दिया
चलती रही
निश्चित परिपाटी पर
बैसाखियों के सहारे
कितने पड़ाव आयें।"

स्त्री स्वतंत्रता की कामना करती है। वह परिवेश से अपने आप को असहाय समझती है। दलित स्त्रियों को समाज के हर एक पहलू से अलग रखा जाता है। यहाँ तक की दलित स्त्रियों को आज भी गाँव के मंदिर में जाने की इजाजत नहीं है। भारतीय समाज में दलित स्त्री का बहुत शोषण हुआ है। समाज स्त्री को मानव का दर्जा भी नहीं देना चाहता और दलित स्त्री आज भी अत्याचार आसानी से सहे जा रही है। उसे सवर्ण समाज से आज भी दो–चार होना पड़ता है। उनकी 'विद्रोहीणी' कविता में स्त्री का विद्रोह नजर आता है–

PRINCIPAL
Nutan Mahavidyalaya
SELU Dist. Parbhani

Scanned with OKEN Scanner

NUTAN MAHAVIDYALAYA
SELU

"मुझे अनंत असीम दिगंत चाहिए
छत का खुला आसमान नहीं
आसमान की खुली छत चाहिए
मुझे अनंत असीम दिगंत चाहिए।"

आज भी स्त्री अन्याय अत्याचार को सहने वाली नही वह अन्याय का मुंहतोड़ जवाब देना सीख चुकी है। 'नमुना' कविता में स्त्री अन्याय का मुंहतोड जवाब दिखाई देता है।

"मेरा उपयोग
मेरा उपयोग
नहीं सह सकती मैं
सदियों से
शोषित पीड़ित
अब नहीं रह सकती मैं।"

निष्कर्ष :– सुशीला टाकभौरे के काव्यसंग्रह का अध्ययन करने से यह पता चलता है कि भारतीय अस्मिता मे पिछड़ों और दलितों का स्थान, दलित अस्मिता का आशय, परम्परा और स्त्री दलित चेतना का संबंध काव्यसंग्रह के केंद्र में है। उनकी कविताएँ दलित स्त्री की प्रगति की बात करती है। समाज परिवर्तन की माँग करती है। उनका काव्य दलित नारी चाहे ग्रामीण हो या शहरी दोनों को प्रोत्साहित करता है। दलित और दलित स्त्री का जीवन एक जैसा ही रहा है। उनका काव्य मानव मूल्य की अभिव्यक्ति करता है। समाज में समानता का स्वर उनके काव्य में मिलता है। वर्णवादी समाज को खुलकर चुनौती उन्होने दी है। उनका काव्य दलित [illegible] को अपनी स्थिती का अहसास कराता है। दलित स्त्री [illegible] के मुक्ती के लिये आवाहन करती है। दलित स्त्री मुक्ति की [illegible] करती है। फिर भी हमारे समक्ष प्रश्न यह क्या नारी [illegible] है? यह प्रश्न मुझे आज भी अनुत्तरीत करता है।

PRINCIPAL
Nutan Mahavidyalaya
SELU Dist. Parbhani

Scanned with OKEN Scanner